बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 129/2025) **Year: 7th**

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 1.05.2025(1-15 May)**

सामान्य सलाह

ग्रीष्म ऋतु का आगाज हो चूका है। किसान भाई को कृषि कार्यों हेतु घर से बहार जाने की मजबूरी होगी । इस दशा में विशेष सावधानी वरतने की आवश्यकता होती है -

- अगर संभव हो तो दोपहर के समय अनावश्यक घर से बाहर नहीं जायें ।
- जाना आवश्यक होने पर अपने को पूरी तरह ढँक कर तथा पर्याप्त मात्रा में अपनें साथ पानी लेकर जायें ।
- यथासंभव सुबह और शाम के समय कृषि कार्य करें ताकि धुप से बचा जा सके।

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ संभावित अधिक तापमान के मद्देनजर कद्दू वर्गीय, बैगन, टमाटर, मिर्च तथा भिंडी की खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ ग्रीष्म कालीन उत्पाद हेतु रोपित टमाटर, बैगन व मिर्च की फसलों में समुचित नमी बनाए रखें ताकि अत्यधिक तापमान से पुष्पपतन कम हो। ➢ प्याज व लहसुन फसलों की खुदाई कर लें। ➢ मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु की नव रोपित फसलों में मृदा नमी संरक्षणहेतु सूखी घास या पुआल का पलवार प्रयोग करें। ➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए चिन्हित खेतों की जुताई कर दें ताकि रोग कीट तथा खरपतवार के बीज नष्ट हो जाय।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	शस्य.प्रबंधन ➢ रबी फसल के उपज को अच्छी तरह साफ कर धूप में सुखाकर 12 प्रतिशत से कम नमी की दशा में भंडारित करना चाहिये। ➢ इस समय के तापमान को ध्यान में रखते हुये सभी फसलों में हल्की सिंचाई अवश्य करें। सिंचाई हमेशा शाम या सुबह के समय करना चाहिये। ➢ हरी खाद हेतु मूँग, सनई, ढ़ैचा की बुआई प्रथम सप्ताह में अवश्य पूर्ण करें। ➢ खाली खेत में ग्रीष्मकालीन जुताई अवश्य करें। ➢ आवश्यक होने पर मृदा समतलीकरण अवश्य कर लें।

		➢ कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि खेत में ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अवश्य करें। ➢ गर्मी की जुताई पूर्ण कर खेत को खुला छोड़ दे ताकि कीट के अंडे–बच्चे रोगजनक एवं खरपतवार के बीज आदि नष्ट हों जायें। मृदा.प्रबंधन ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवष्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाष का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एक तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा। ➢ मिट्टी परीक्षण हेतु मृदा नमूना एकत्र कर नजदीकी प्रयोगषाला में परीक्षण हेतु भेजें। ➢ ग्रीष्म कालीन मूंग की बुवाई में 20:60:20 कि0ग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजनः फास्फोरसः पोटाश का प्रयोग करें। इस हेतु 50 कि0ग्रा0 DAP एवं 13 कि0ग्रा0 MOP प्रति एकड बुवाई के समय आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	इस माह में तापमान काफी बढ़ जाता है तथा मैदानी क्षेत्रों में धूलभरी ऑधियॉ व लू (गर्म हवा) इंसानों को ही नहीं अपितु पशु पक्षियों को भी प्रभावित करती है। इस कारण गर्मी से होने वाली बीमारियाँ पालतू पशुओं को भी प्रभावित करती है। गर्म मौसम में पशुओं की आहार ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है। जिस कारण दुधारू पशुओं का उत्पादन भी कम हो जाता है. ➢ इसके निदान के लिए पशुओं को भोजन पानी में भिगोकर देना चाहिए एवं हरे चारे की मात्रा बढ़ानी चाहिए जिससे पशुओं द्वारा भोजन की ग्राहयता बढ़ेगी। ➢ दुधारू पशुओं, नवजात व छोटे जानवरों एवं संकर नस्ल की गायों को दिन के समय में धूप में जाने व बॉधने से बचाना चाहिए तथा उनके बॉधने के स्थान में भी गर्म हवा (लू) से बचाव की व्यवस्था करनी चाहिए। ➢ गर्म मौसम में पशुओं के शरीर में लवणों की कमी हो जाती है जिससे बचाव के लिए खनिज लवण उपयुक्त मात्रा में भोजन के साथ मिलाकर देना चाहिए तथा साथ ही साथ भोजन में सभी अवयवों का सही एवं उपयुक्त मिश्रण होना चाहिए जिससे दुधारू पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता इस विपरीत मौसम में भी प्रभावित नहीं होगी।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।

		➢ मूँग/उर्द में बालदार गिडार के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। जैविक नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए अथवा एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0. 15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। ➢ आम में भुनगा कीट व मिली बग की रोकथाम हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए अथवा क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ सब्जियों की फसलों में माईट की निगरानी करते रहें व आवश्यकता पड़ने पर घुलनशील गंधक का 3 ग्राम/लीटर अथवा स्पाइरोमेसिफेन 0.8 मिली/ली की दर से छिड़काव करें। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को 24 – 48 घंटा तक शोधित कर लगाने से लगभग 500 मी0

		तक की फल मक्खी आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ बुंदेलखंड क्षेत्र में मई माह dk तापमान अधिक (40°C से ऊपर) तथा हवा सूखी होती है, जिससे कई रोगों की संभावना कम होती है, परंतु कुछ गर्मी की फसलें और सब्जियाँ इस मौसम में रोगों से प्रभावित हो सकती हैं। ➢ ग्रीष्मकालीन मूंग, उड़द, तिल आदि: ➢ पत्ती धब्बा (Leaf spot) एवं पाउडरी मिल्ड्यू का प्रकोप संभव है। येलो मोज़ैक वायरस का प्रकोप सफेद मक्खी के माध्यम से होता है। ➢ उपाय:पाउडरी मिल्ड्यू पर घुलनशील सल्फर (80% WP) @ 2.5 ग्राम/लीटर छिड़काव करें। येलो मोज़ैक से बचाव हेतु नीम तेल 1500 ppm @ 5 मिली/लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% SL @ 0.3 मिली/लीटर का छिड़काव करें। ➢ सब्जियाँ (भिंडी, टमाटर, मिर्च, कद्दूवर्गीय फसलें): तापमान अधिक होने पर भी झुलसा (Blight), फलों की सड़न, एवं उकठा (Wilt) जैसे रोग दिख सकते हैं। ➢ उपाय:मैन्कोजेब 75% WP या क्लोरोथालोनिल @ 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ उकठा से बचाव हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडे को 5 किलो सड़ी गोबर की खाद में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से खेत में प्रयोग करें। ➢ खरबूजा, तरबूज, लौकी, ककड़ी, करेला आदि: फफूंदजनित रोग जैसे डाउनी मिल्ड्यू, एन्थ्राक्नोज, और सफेद चकत्ते (पाउडरी मिल्ड्यू) दिख सकते हैं। ➢ उपाय: डाउनी मिल्ड्यू में मैटलैक्सिल + मैन्कोजेब @ 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ सफेद चकत्तों पर सल्फर आधारित फफूंदनाशी का प्रयोग करें। ➢ भंडारित अनाज (चना, गेहूं, सरसों): भंडारित अनाज में फफूंदी (fungus) लगने की संभावना होती है। ➢ उपाय:भंडारण से पूर्व अनाज को अच्छी तरह धूप में सुखाएं। ➢ भंडारण के समय नीम की सूखी पत्तियाँ या नीम खली का प्रयोग करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	मई का महीना भारत में अक्सर भीषण गर्मी और शुष्क मौसम का होता है। इस समय फलदार पौधों (जैसे आम, नींबू, अमरूद, अनार, पपीता आदि) को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है ताकि वे गर्मी के तनाव को झेल सकें और फलों का विकास ठीक से हो सके।

		➢ इस माह मे गर्मी होने की वजह से काफी सावधानियां अपनानी चाहिये। सिंचाई 15 दिन के अन्तराल पर अवष्य दें। बूंद–बूंद सिंचाई सबसे अधिक लाभकारी विधि है। ➢ भूमि के जल को मलचिंग द्वारा संरक्षित किया जा सकता है जिसमें पॉलीथीन शीट, सूखी धास फूस, चने का भूसा इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है। ➢ नये बाग लगाने के लिए गढ्ढे अभी खोद दें ताकि धूप से कीड़ो तथा बीमारियों का नियंत्रण हो सके । माह के अन्त में इन गढ़ढों में आधा उपर वाली मिट्टी तथा आधी कम्पोस्ट में क्लोरपाइरीफास दवाई मिलाकर पूरी तरह से उपर तक भर दें । ➢ आम के पेड़ों की देखभाल अच्छी तरह से करते रहें तथा जड़ों में समय –समय पर पानी देते रहें ताकी पानी के अभाव में फल मुरझाकर नीचे न गिरने लगे। ➢ आम में मई माह में फूलों की जगह पत्तों के गुच्छे बन जाते हैं इन्हें तोड दें । इस समस्या से निदान पाने के लिये एन0 ए0 ए0 का 200 पी. पी. एम. घोल का छिडकाव करें । ➢ नीबू प्रजाति के पोधों में फल गिरने की शिकायत मिलती है, इसे २–४ डी (10 पी. पी. एम.) या 0.7 प्रतिशत जिंक सल्फेट या आरोफुगिन (20 पी. पी. एम.) के घोल का स्प्रे करने पर रोका जा सकता है। ➢ इस माह में केला और पपीता के फलों को पत्तियों व बोरियों से ढक कर तेज धूप से बचाया जाता है। ➢ बेर में कटाई छंटाई के लिए मई का महीना उपयुक्त होता है, जब पौधों की अधिकांश पत्तियां झड़ चुकी होती हैं तथा पेड़ सुषुप्तावस्था में हो, सबसे उपयुक्त माना जाता है । रोगों के प्रकोप से बचाव के लिए शाखाओं के कटे हुए स्थानों पर फफूंदनाशी (नीला थोथा या ब्लाइटाक्स– 50) का लेप कर देना चाहिए । ➢ गर्मियों में आमतौर पर वातावरण निरंतर शुष्क होता जाता है, जिससे मृदा में पानी की कमी होने लगती है । अमरूद में उचित समय पर सिंचाई नहीं होने पर फलों की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है, जिसके परिणामतः फल छोटे रह सकते है, इसलिए 8 से 10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई कर दी जानी चाहिए। फलमक्खी नियंत्रण के लिए 1.5 मि.ली. प्रोफेनोफास प्रति लीटर पानी में मिलाकर फल परिपक्कता के पूर्व 10 दिनों के अंतर पर 2–3 छिड़काव करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु क्रमाः छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है।

		➢ कृषि वानिकी प्रणाली के तहत लगाए गए दो–पांच साल के पेड़ों को पलवार करना (घास–पात से ढकना) की सलाह दी जाती है ताकि मिट्टी में नमी बरकरार रहे। ➢ किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पौधारोपण/वृक्षारोपण से पूर्व 30x30x30 cm आकार के गड्ढे तैयार कर लें। ➢ ग्रीष्म लहर के दौरान पेड़ों की अनावश्यक छंटाई या प्रत्यारोपण से बचें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय डॉ मयंक दुबे	6. डॉ दिनेश गुप्ता 7. डॉ पंकज कुमार ओझा 8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 9. डॉ जगन्नाथ पाठक 10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार